रात्रि क्लास 26-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

इस समय रूहानी बच्चे लड़ाई के मैदान पर हैं। मनुष्यों को संकल्प विकल्प होते ही हैं। इस समय कोई संकल्प विकल्प आते हैं तो कहते हैं ज्ञान में न होनी चाहिए। बाप समझाते हैं ज्ञान में ही लड़ाई चलती है। अज्ञान में तो कर्म इन्द्रियों पर जीत न था। अभी बाप ने मना की है कर्मइन्द्रियों से पाप न करना है। संकल्प विकल्प आवेंगे परन्तु कर्मणा में न आना है। न चाहते हुये भी विकल्प आवेंगे। तब तो युध कहेंगे। माया बहुत तुफान लाती है। इनसे विकर्म करावें। यह कर्मातीत न बने। तो युद्ध ना न है। कर्मइन्द्रियों से न करना है। तूफान भी अभी कहा जाता। आगे तूफान नहीं कहते थे। बाप ने समझाया है विकारी बाहर निकलेंगी। जास्ती विकल्प आवेंगे। तूफान आने दो। कर्म इन्द्रियों से न करना है यह सम्भाल रखनी है। विकार में जाते हैं तो बहुत पछतावा करते हैं यह गफलत है। आगे ऐसे नहीं समझते थे कि यह भूल है। भूल अभी समझते हो। विकारी आती है। देहअभिमान में आना भी विकार हो गया। मनुष्य समझते हैं यह तो प्रकृति का धर्म है। होना ही है। बाप कहते हैं अभी नहीं होना चाहिए। विकारों में जाने का मना बाप ही करते हैं। तो माया भी सामना करती है। न चाहते हुये भी तूफान जास्ती आवेंगे। शिव बाबा पास आते हैं भाको पहलनते हैं। यह हुई ऊंच ते ऊंच का भाका। फिर और कोई की भाकी पहन नहीं सकते। इन बातों में थोड़ा समझना होता है। हां किसको राजी करने लिये झगड़ा मिटाने लिये पहन ले। वह विकार में जाना तो नहीं हुआ ना। हो बाप को याद में परन्तु उनका हठ मिटाने लिये साक्षी हो किया जाता है। यह युक्तियां अभी समझाई जाती है। अभी तुम युध के मैदान में हो। तो बाप खबरदार करते हैं। जहां झगड़ा आदि न है तो भाई2 हो रहना है। हम बाप से वरसा ले रहे हैं। उसी मौज में रहना है। बाप के बन गये ना फिर जिस्मानी हलचल न हो। नहीं तो कशिश होगी। ऐसी अवस्था इस समय कोई की है नहीं। अभी हो जाये तो कर्मातीत अवस्था कही जाये। इसलिये कुछ न कुछ ड्रामनल आई चलती रहेगी। कोई की थोड़ी कोई की बहुत। इसलिये हनुमान का मिसाल है। कितना भी 5 विकारों का तूफान आये हिला न सके। पिछाड़ी की बात है। लंका को आग लग रही थी। विनाश हो रहा था। महावीरों की अटोल अवस्था उस समय रहती है। उन्होंने फिर हनुमान आदि की बातें बैठ बनाई है। कोई2 बाप को बताते हैं कोई नहीं बताते हैं। इसलिये बाबा कहते हैं चार्ट रखो। फिर पूछ सकते हो इनको क्या कहें। क्योंकि माया बुद्धियोग तोड़ देती है ना। चार्ट भी वह समझ से लिखना होता है। बिलवेड बाप को हम अलीफ याद किया करते जानते हैं हम शिव बाबा के बच्चे हैं तब यहां बैठे हैं। बाप को अपना बनाना है। वारिस तो बन जाते हैं बाकी ऊंच पद पाने लिये यह सभी खबरदारी रखनी है और फिर सर्विस भी करनी है। बहुतों का कल्याण करने से इकट्ठा हो जाता है। दूसरों का कल्याण करने से अपने को भी कायदे अनुसार बरकत मिलती है। अपना पोतामेल निकालना अच्छा है। बाबा ने देखा है कैसे धंधे में पोतामेल रखते हैं। रोज का भी निकालते हैं आज इतना खर्चा इतना फायदा हुआ। तुम्हारा है नाजुक कारोबार। सुस्ती छोड़ इनका पोतामेल रखो तो बहुत फायदा हो सकता है। बाबा को देखा हुआ है। सारी जीवनकहानी बैठ लिखते हैं। वाल्यूम्स बन जाते हैं। कहता था हम अच्छा काम करता हूं। परन्तु था तो विकारी ना। भक्त लोग विकार को खराब नहीं समझते हैं। बाप समझाते हैं आधा कल्प तो तुम अपवित्र रहते हो फिर आधा कल्प रावणराज्य में तुमको अपवित्र होना ही है। बच्चे रात को जागते हैं तो भी आपस में राय कर याद में रहे। हां माया विघ्न डालेगी। बुधि को कहां2 ले जावेगी। पुरुषार्थ करना है हम बाबा को याद करते हैं। उनकी याद से ही बेड़ा पार होना है। स्वर बैल्दीभी बनेंगे। घड़ी2 एक दो को सावधान करते उन्नति को पाते रहे। पक्के हो जावेंगे तब अन्त में विजय होगी। बाबा को बतला सकते हैं बाबा हमारा यह चार्ट है। तो फिर हिर जावेंगे। हिर पड़ जाने से चार्ट अच्छा रहेगा। कमाई अथाह है। लड़ाई भी बहुत कड़ी है। बाप को याद करने की। वह बाप को याद करते माया अपने तरफ कशिश करती है। इस पर नाटक भी है। परन्तु अर्थ नहीं समझते थे राज क्या होता है। अभी समझ आई है। मूल बात यही। बाप को याद करना है। 84 के चक्र को याद करना है। और खुशी में रहना है जिसका गायन है अति इन्द्रियं सुख गोप गोपियों से पूछो। अच्छा गुडनाईट और नमस्ते।